भोर की भोलावण

आवाज सुरीली मोर की
जब कानो में पड़ती है,
सच कहता हूँ सुबह सुबह
अमृत वाणी लगती है,
पूर्व दिशा में लालिमा छाई
संदेश हमको देती है,
अब भोर भई इंसान जागो
हवा हमे कहती है,
विष्णु की इस पवित्र धरा पर
गीत कोयल गाती है,
इंसान की खुशियों के लिए
आराधना करती है,
उषाकाल में ठंडी ठंडी हवा
संदेश हमे देती है,
जीवन है अनमोल सभी का
हम सबको कहती है,
भोर में जो जल्दी उठता है
सफलता मिलती है,
जिस घर मे माता पिता की
आशीष जिसे मिलती है,
उस घर में हर एक प्राणी को
ख़ुशियाँ ही मिलती है,
जिस घर की बूढ़े बुजुर्गों की
इज्जत पूरी होती है,
उस घर के लोगों के दिल मे
सवेदना बसती है,
भारत की इस परम्परा को
कायम हमे रखनी है,
आने वाली पीढ़ी कर दिल मे
यह ज्योत हमे जलानी है,

✍ गोपाल कृष्ण व्यास